भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड–XXVII अंक–15 15 अगस्त, 2022

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।
दलन मोह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर आवई जासू।।

श्री गुरु महाराज के चरण–नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञान रूपी अंधकार का नाश करने वाला है; वह जिसके हृदय में आ जाता है, उसके बड़े भाग्य हैं।

श्रीरामचरितमानस (बालकाण्ड)/3

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/64318 दिनांक 8.8.2022 के अनुसार **प्रो. विक्रान्त** ने 4.8.2022 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. विक्रान्त को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/64552 दिनांक 5.8.2022 के अनुसार **प्रो. शान्तनु मन्ना** ने 3.8.2022 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. शान्तनु मन्ना को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-5/2022/63500 दिनांक 3.8.2022 के अनुसार **डॉ. श्रानिश कर** ने 1.8.2022 से संस्थान के अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/12010 दिनांक 29.7.2022 के अनुसार **प्रो. पुष्किन काचरू** ने 18.7.2022 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया

बधाई

डॉ. नबी हसन, पुस्तकालयाध्यक्ष, केंद्रीय पुस्तकालय को एस.एल.ए. फेलो (2022) की सूची में शामिल किया गया है। यह सम्मान उन्हें 1 अगस्त 2022 को शेर्लोट, यू.एस.ए. में प्रदान किया गया है। उन्हें अब फेलो ऑफ एस.एल.ए. (FSLA) के रूप में जाना जाएगा।

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/62011 दिनांक 3.8.2022 के अनुसार **डॉ. अनिर्बन नाग,** (अन्तरविद्याशाखायी अनुसंधान स्कूल, SIRe) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था, जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 25.8.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. अनिर्बन नाग का 25.8.2022 से संस्थान कार्य से मुक्त हो जाएंगे।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-2/2022/65067 दिनांक 8.8.2022 के अनुसार **श्री राजकिशोर कुमार** (कनिष्ठ सहायक) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 8.8.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री राजकिशोर को 8.8.2022 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

उन्नत भारत अभियान के द्वारा 'टेक फॉर सेवा' का आयोजन

उन्नत भारत अभियान शिक्षा मंत्रालय का एक प्रमुख कार्यक्रम है और अपने महाविद्यालयो के माध्यम से ''आत्मनिर्भर भारत'' के उद्देश्य की प्राप्ति की दिशा में लगातार गाँवों में काम कर रहा है।

''आजादी का अमृत महोत्सव'' के प्रति योगदान करते हुए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली (आई.आई.टी. दिल्ली)–क्षेत्रिय समन्वयक संस्थान द्वारा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के क्षेत्रिय स्तर पर 'टेक फॉर सेवा' कार्यक्रम का आयोजन 5 अगस्त 2022 को किया गया। ''टेक फॉर सेवा'' (Tech.4Seva) कार्यक्रम समावेशी भारत की प्रौद्योगिकी के निर्माण में मदद करने के लिए ग्रामीण आबादी को उच्च शिक्षण संस्थानों से जोड़ने की एक सजग पहल है। कार्यक्रम में उन्नत भारत अभियान के अंतर्गत आने वाले ~20 संस्थानों द्वारा विकसित 27 प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया।

डॉ. विजय पी. भटकर (राष्ट्रीय संचालन समिति के अध्यक्ष), प्रो. वीरेंद्र कुमार विजय (राष्ट्रीय समन्वयक, उन्नत भारत अभियान), डॉ. केतकी बापट (प्रमुख वैज्ञानिक, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार कार्यालय, भारत सरकार), प्रो. विवेक कुमार एवं प्रो. प्रियंका कौशल (उन्नत भारत अभियान के सह–समन्वयक) और आई. आई. टी. दिल्ली के विषय विशेषज्ञों; प्रो. एस.के साहा, प्रो. एस. एन नायक, प्रो. सुमेर सिंह, प्रो. गौरव द्विवेदी, प्रो. संगीता कोहली एवं प्रो. दिबाकर रक्षित ने प्रतिभागियों से बातचीत की और उनके द्वारा प्रस्तुत प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन किया। निर्णायकगण के मूल्यांकन के अनुसार इस कार्यक्रम के परिणाम 15 अगस्त, 2022 को घोषित किये जायेंगे जिसमें 3 प्रौद्योगिकियों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता के लिए भेजा जायेगा ।

बधाई (पदोन्नति)

स्थापना अनुभाग–1 से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार निम्नलिखित संकाय सदस्यों को उनके नाम के आगे दिए गए पद के लिए चयनित/पदोन्नत किया गया है–

संकाय सदस्य का नाम	पिछला पदनाम	नया पदनाम	विभाग/केन्द्र	वेतनमान
प्रो. (सुश्री) महुया बंद्योपाध्याय	सह प्रोफेसर	प्रोफेसर	मानविकी एवं समाज विज्ञान	1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
प्रो. सर्वेश्वर साहू	सह प्रोफेसर	प्रोफेसर	मानविकी एवं समाज विज्ञान	1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
प्रो. दीपक जोशी	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	जैव चिकित्सा इंजीनियरी	1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
प्रो. सत्यानन्दा कर	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	ऊर्जा एवं इंजीनियरी	1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
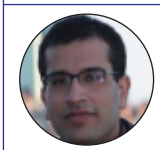 **प्रो. मयंक कुमार**	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	यांत्रिक इंजीनियरी	1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
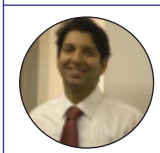 **प्रो. सुबोध विष्णु शर्मा**	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी	1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)

बधाई (पुरस्कार)

कुलसचिव सचिवालय से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को वर्ष 2021 का ''लाइफटाइम पुरस्कार''; ''श्री राम ऋषि सिंह एवं श्रीमती मालती सिंह स्मृति स्टॉफ नगद पुरस्कार''; ''उत्कृष्ट कर्मचारी पुरस्कार'' तथा ''संस्थान प्रोत्साहन पुरस्कार'' दिया गया।

क्र. सं	अवार्ड का नाम	अवार्डों की संख्या	मूल्य रूपए में
1.	**लाइफटाइम अवार्ड 2021**	02	50,000/–
2.	**उत्कृष्ट कर्मचारी पुरस्कार 2021**	01	30,000/–
3.	**श्री राम ऋषि सिंह एवं श्रीमती मालती सिंह स्मृति स्टाफ नगद अवार्ड 2021**	02	36,000/–
4.	**संस्थान प्रोत्साहन पुरस्कार 2021**	समिति के फैसले के अनुसार	20,000/–

''लाइफटाइम अवार्ड 2021''

क्र. सं	कर्मचारी का नाम/पदनाम	कर्मचारी कोड संख्या	इकाई
1.	श्री सुरेश कुमार गोहर सहायक कुलसचिव	26378	शैक्षणिक
2.	श्रीमती अनीता मोहन दास स्टाफ नर्स	26114	अस्पताल

''उत्कृष्ट कर्मचारी पुरस्कार 2021''

क्र. सं	कर्मचारी का नाम/पदनाम	कर्मचारी कोड संख्या	इकाई
1.	श्री एन. भास्कर उप कुलसचिव	25785	निदेशक कार्यालय

"श्री राम ऋषि सिंह एवं श्रीमती मालती सिंह स्मृति स्टाफ नगद अवार्ड 2021"

क्र. सं	कर्मचारी का नाम / पदनाम	कर्मचारी कोड संख्या	विभाग
1.	श्रीमती उषा देवी एन. तकनीकी अधीक्षक	26666	विद्युत इंजीनियरी विभाग
2.	श्री फूल चंद सैनी कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक	26763	अस्पताल

"संस्थान प्रोत्साहन पुरस्कार 2021"

क्र. सं	कर्मचारी का नाम / पदनाम	कर्मचारी कोड संख्या	विभाग / केन्द्र / अनुभाग
1.	श्री चंद्रमा शर्मा कनिष्ठ अधीक्षक	25727	केन्द्रीय कार्यशाला
2.	श्री धीरेंद्र राणा कनिष्ठ सहायक	27344	छात्र संकायाध्यक्ष कार्यालय
3.	सुश्री ज्योति ग्रोवर अधीक्षक	25805	संकायाध्यक्ष, आर. ऐन्ड डी कार्यालय
4.	श्री के.बी. कल्याणी केयरटेकर	26740	छात्र कार्य नालंदा छात्रावास
5.	श्री मोहित विज सहायक मेस मैनेजर	27395	छात्र मामले हिमाद्रि छात्रावास
6.	श्री मुरली हिंदवानी कनिष्ठ अधीक्षक	25494	कुलसचिव सचिवालय
7.	सुश्री नीलम सिंधवानी अधीक्षक	25807	मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
8.	श्री राहुल बौराई कनिष्ठ सहायक	27367	उपनिदेशक (नीति एवं योजना)
9.	श्री रमेश चंदर परिचारक	50608	करियर सेवाएं कार्यालय
10.	श्री संदीप अरोड़ा वरिष्ठ सहायक	26440	विद्युत इंजीनियरी विभाग
11.	सुश्री शरणप्रीत कौर धीमान वरिष्ठ सहायक	26528	स्थापना अनुभाग–2
12.	श्री सुजीत एस कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	27012	भौतिकी विभाग
13.	सुश्री तजिंदर कौर कनिष्ठ अधीक्षक	26754	संकायाध्यक्ष, शैक्षिक कार्यालय

हिन्दी पखवाड़े पर आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रदान की जाने वाली पुरस्कार राशि

संस्थान में हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं की पुरस्कार राशि अभिशासक परिषद (BOG) की संकल्प संख्या बी.जी. / 196 के द्वारा अनुमोदित की गई है। प्रतियोगिता में प्रदान किए जाने वाले पुरस्कारों की राशि निम्नानुसार है:–

प्रतियोगिताओं के नाम	मंजूर की गई राशि (रु. में)
हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	2500 / –
द्वितीय पुरस्कार	2000 / –
तृतीय पुरस्कार	1500 / –
राजभाषा हिन्दी शब्दावली प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	2500 / –
द्वितीय पुरस्कार	2000 / –
तृतीय पुरस्कार	1500 / –
हिन्दी टिप्पण / प्रारूपण (Noting / Drafting) लेखन प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	2500 / –
द्वितीय पुरस्कार	2000 / –
तृतीय पुरस्कार	1500 / –
हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	2500 / –
द्वितीय पुरस्कार	2000 / –
तृतीय पुरस्कार	1500 / –
कम्प्यूटर हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	2500 / –
द्वितीय पुरस्कार	2000 / –
तृतीय पुरस्कार	1500 / –
स्व–रचित हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता (स्टाफ एवं विद्यार्थी)	
प्रथम पुरस्कार	2500 / –
द्वितीय पुरस्कार	2000 / –
तृतीय पुरस्कार	1500 / –
हिन्दी प्रश्नमंच (Quiz) प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	2500 / –
द्वितीय पुरस्कार	2000 / –
तृतीय पुरस्कार	1500 / –

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव

भारत उठो और संसार को जीत लो

भारत की अवनति के कारणों को इंगित करते हुए उसके उत्थान की परिकल्पना प्रस्तुत की स्वामी विवेकानंद ने। उनकी पुण्यतिथि (4 जुलाई) पर पढ़िए उनकी पुस्तक–''जागृति का संदेश'' से धार्मिक और राष्ट्रीय भावनाओं को उत्तेजित करने वाले ऐसे ही एक भाषण का अंश ...

संसार में बहुत सी बड़ी–बड़ी दिग्विजयी जातियाँ हो गई हैं । हम लोग भी सदा दिग्विजयी रहे हैं। हम लोगों के दिग्विजय के उपाख्यान में भारत के उस महान सम्राट अशोक के धर्म और आध्यात्मिकता के दिग्विजय का वर्णन किया गया है। फिर भारत को संसार पर विजय प्राप्त करना होगा। यही मेरे जीवन का स्वप्न है, जो मेरी बात को सुन रहे हैं, उन सबके मन में यह कल्पना जागृत हो और जब तक तुम इसे कार्य रूप में परिणत नहीं कर सकते, तब तक दम नहीं लेना चाहिए। लोग तुमसे रोज कहेंगे कि पहले अपना घर संभालो, फिर विदेश में प्रचार के लिए जाना, लेकिन मैं तुम लोगों से बिल्कुल स्पष्ट भाषा में कहता हूँ कि जब तुम लोग दूसरों के लिए कार्य करोगे तभी सर्वोत्तम कार्य कर सकोगे।

आज की सभा से यह प्रमाणित होता है कि तुम्हारे विचारों द्वारा दूसरे देशों में ज्ञानलोक फैलाने की चेष्टा करने से वह किस प्रकार आप ही के लिए सहायक होगा। अगर मैं भारत में ही अपने कार्यक्षेत्र को सीमाबद्ध रखता तो इंग्लैंड और अमेरिका जाने से जो कुछ अच्छा फल हुआ है, उसका एक चौथाई फल भी न होता। यही हम लोगों के सामने एक महान आदर्श है और प्रत्येक को इसके लिए तैयार रहना पड़ेगा। भारत के द्वारा समस्त संसार को विजय करना होगा, इससे कम कुछ भी नहीं चलेगा, इसके लिए प्राणों की बाजी लगानी पड़ेगी।

विदेशियों ने आकर अपनी सेना भारत भर में फैला दी है, लेकिन कुछ परवाह नहीं। भारत उठो, अपनी आध्यात्मिक शक्ति से संसार को जीत लो। इसी देश में यह बात पहले पहल कही गई थी कि घृणा द्वारा घृणा को नहीं जीता जा सकता, प्रेम के द्वारा विद्वेष को जीता जा सकता है, हम लोगों को यही करना पड़ेगा। जड़वाद और उससे उत्पन्न दुखों को जड़वाद के द्वारा जीता जा सकता है।

जब एक सेना दूसरी सेना को बाहुबल से जीतने का प्रयत्न करती है तो वह मनुष्य जाति को पशु जाति में परिणत कर देती है और क्रमशः पशुओं की संख्या बढ़ने लगती है। आध्यात्मिकता अवश्य ही पाश्चात्य देशों को जीतेगी। धीरे–धीरे वे लोग समझ रहे हैं कि यदि वे एक जाति के रूप में होना चाहते हैं तो उन्हें आध्यात्मिक भाव संपन्न होना पड़ेगा। वे इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं और उत्सुक हैं। वह कहां से आएगा ?

भारत के महर्षियों के भावों को लेकर प्रत्येक देश में जाने वाले लोग कहां पर मिलेंगे ? संसार की गली–गली में यह कल्याणकारी बात गूंज उठे, इसके लिए स्वस्व त्याग करने को तैयार रहने वाले लोग कहां पर मिलेंगे ? सत्य के प्रचार में सहायता करने वाले वीरों की आवश्यकता है।

विदेश में जाकर वेदांत के इस महान तत्व का प्रचार करने वाले वीर हृदय वाले कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है।

संसार के लिए इसकी आवश्यकता हुई है, अगर ऐसा न होगा तो संसार का नाश हो जाएगा। हम लोगों के लिए यही कार्य करने का समय है, जिससे भारत का आध्यात्मिक भाव पाश्चात्य देशों में खूब फैल जाए। इसलिए हे नौजवानों ! मैं तुम लोगों से इसे खूब अच्छी तरह से याद रखने के लिए कह रहा हूँ। एक दिन जो जीवन तेजस्वी था, उसे एक बार फिर तेजपूर्ण करके भारतीय विचारों द्वारा संसार की जीतना होगा। हम लोगों को सावधान होना पड़ेगा, क्योंकि इस देश में हम लोगों के सिर पर न जाने कितनी विपत्तियाँ मंडराया करती हैं, उनमें से एक और तो घोर जड़वाद है, दूसरी और उसके प्रतिक्रियारूप कुसंस्कार है, दोनों से ही बचकर चलना पड़ेगा।

मैं आप लोगों को घोर नास्तिक देखना पसंद करूंगा, लेकिन कुसंस्कार से भरे मूर्ख के रूप में देखना नहीं चाहूंगा, क्योंकि नागरिकों में कुछ न कुछ आशा है। वे मुर्दे नहीं है, लेकिन अगर मस्तिष्क में कुसंस्कार घुस जाते हैं तो वह बिल्कुल बेकार हो जाता है। मैं साहसी, निर्भीक लोगों को चाहता हूं। मस्तिष्क को बेकार और कमजोर बनाने वाले भावों की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारे और तुम्हारी संपूर्ण जाति के लिए घोर नास्तिक होना अच्छा है, क्योंकि नास्तिक होने से कम से कम तुममें तेज तो रहेगा, किंतु इस तरह कुसंस्कारपूर्ण होना अवनति और मृत्यु का कारण है।

हम लोग सदा से ही किसी व्यक्ति विशेष के अनुयायी नहीं हैं, हम लोग धर्म के तत्वों के उपासक हैं। व्यक्ति उन तत्वों की साकार मूर्ति है, उदाहरणस्वरूप है। यदि ये तत्व समूह अविकृत बने रहेंगे तो सैकड़ों महापुरुष, सैकड़ों बुद्ध देव का अभ्युदय होगा। हमारे धर्म के ये तत्व अविकृत रहें और उन पर काल की मलिनता और धूल न चढ़ने पाए, इसके लिए हमें जीवनभर प्रयत्न करने पड़ेंगे।

(यह भाषण ट्रिप्लीकेन की साहित्य समिति में दिया गया था। इसी समिति के उद्योग से स्वामी जी शिकागो की धर्म महासभा में हिंदू धर्म के प्रतिनिधि बनकर गए थे)।

साभार–दैनिक जागरण

दिनांकः 03.07.2022

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com